ISSN 2278-8808
UGC APPROVED SR. NO. 45269
SJIF 2016 = 6.177
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

मदरसा शिक्षा का प्रगतिशील विकास: समस्याएँ एवं समृधि हेतु सुझाव

शमीमा अंसारी & शिरीष पाल सिंह, Ph. D.

[1](शोधार्थी)महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

[2]शोध निदेशक, सह प्रोफेसर, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), वर्धा - 442001, महाराष्ट्र

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र मदरसा शिक्षा पर आधारित है | मदरसा मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र होते हैं | इसके दो मुख्य अभिकरण होते हैं-मकतब तथा मदरसा | मकतबों में प्रारंभिक शिक्षा दी जाती है जबकि मदरसों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था रहती है | ये प्रायः दो अर्थों में लिए जाते हैं- सामान्य अर्थ में विद्यालय तथा दूसरे अर्थ में एक ऐसा शिक्षा संस्थान जो धार्मिक शिक्षा प्रदान करता है | इस शोध के माध्यम से मदरसा शिक्षा के गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमान में उसकी स्थिति पर प्रकाश डाला गया है | जिसके तहत मदरसों के उद्देश्य, पाठ्यकर्म एवं उनके विचारों को जाने की कोशिश की गयी है |

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at www.srjis.com**

मदरसा मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र होते हैं | इसके दो मुख्य अभिकरण होते हैं -मकतब तथा मदरसा | मकतबों में प्रारंभिक शिक्षा दी जाती है जबकि मदरसों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था रहती है | ये प्रायः दो अर्थों में लिए जाते हैं- सामान्य अर्थ में विद्यालय तथा दूसरे अर्थ में एक ऐसा शिक्षा संस्थान जो धार्मिक शिक्षा प्रदान करता है, लेकिन ये केवल हदीस और कुरान तक ही सीमित नहीं हैं। (इन्सैक्लोपिडिया ऑफ़ इस्लाम, 1974) | अर्थात यह धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है | यह अरबी भाषा के दर्स

शब्द से बना है जिसका अर्थ है किसी को कुछ पढ़ाना/सिखाना (अलजुनैद और हुसैन 2005) | वह संस्थान जो दसवी तक की शिक्षा प्रदान करते हैं, उन्हें मदरसा कहते हैं दारुल-उलूम शब्द का उपयोग बारहवीं की इस्लामिक शिक्षा के लिए किया जाता है, जबकि जामिया शब्द विश्विद्यालय स्तर की शिक्षा के लिए उपयोग किया जाता है (रियाज़, 2008) | संक्षेप में ऐसा कोई संस्थान जो इस्लामिक मूल की कुरान की शिक्षा प्रदान करता है, मदरसा कहलाता है | इनका उद्देश्य आलिम का निर्माण करना होता है, जो इस्लामिक शिक्षा का प्रसार कर लोगों की खिदमत करे (बानो, 2008) दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मदरसा एक ऐसी संस्था है जहाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया चलती है, चूँकि मदरसा शिक्षा का मुख्य कार्य परम्परागत इस्लामिक शिक्षा का प्रसार करना है ,इसलिए मदरसा शिक्षा और उसके उद्देश्यों को समझने के लिए ये आवश्यक है कि इस्लामिक शिक्षा को समझा जाये | इससे हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि मदरसा शिक्षा किस प्रकार अनौपचारिक शिक्षा से भिन्न है |

इस्लाम में शिक्षा

इस्लाम पूर्णतः अल्लाह के प्रति समर्पण है और मुसलमान वो है जो समर्पण करता है जबकि कुरान इस्लाम और इस्लामिक शिक्षा का केन्द्र है एवं यह सभी प्रकार की इस्लामिक शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है | कुरान के अतिरिक्त इस धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहमद साहब का इस्लामिक शिक्षा व्यवस्था में एक बेशकीमती स्थान है (सिकंद, 2004) | दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि इस्लामिक ज्ञानमीमांसा धर्म और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है (अल-ज़ीरा, 2001) | इस्लाम में शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया है, पवित्र ग्रन्थ कुरान के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है |

मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान की खोज करो चाहे इसके लिए चीन ही क्यों ना जाना पड़े (मिया साहिब, 1991) | कुरान की पहली आयत ही इकरा से शुरू होती है जिसका अर्थ है पढ़ना | कुरान में कहा गया है कि प्रत्येक मर्द और औरत को शिक्षा हासिल करना अनिवार्य है। अशिक्षित व्यक्ति एक मरे हुए इंसान की तरह है अर्थात वह शारीरिक तौर पर तो जिंदा है लेकिन उसकी रूह मर चुकी है | शिक्षा पर ज़ोर देते हुए कहा गया है कि शिक्षा माँ की गोद से शुरू होकर कब्र की गोद तक हासिल की जाये, जिसे अरबी में '**लहद से लेकर अहद**' तक कहा गया है (साजिद कासमी 2005) | इसलिए सामूहिक मुसलमानों को शिक्षित करने के लिए एक प्रणाली विकसित की गयी जिसे मदरसा शिक्षा प्रणाली कहा जाता है |

मदरसा शिक्षा का इतिहास

मदरसा शिक्षा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की इस्लाम धर्म | इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब के द्वारा इस्लामिक शिक्षा (मदरसा शिक्षा) की शुरुआत मक्का में सफा पहाड़ी के पास 'दारुल अकरम' से होती है (साजिद कासमी,2005) | 622 ई0 में जब मुहम्मद साहब मक्का से मदीना गए तब वहां पर मस्जिद-ए–नबवी शिक्षा का केन्द्र बना। यहाँ पर स्त्री एवं पुरूष दोनों ही शिक्षा हासिल करने के लिए आते थे (अलवी,1998) | हज़रत मुहम्मद साहब के युग के बाद अरब प्रायद्वीप के बाहर मदरसों और उल्लेमाओं ने धार्मिक विशेषज्ञों के रूप में इस्लामिक शिक्षा के प्रसार में योगदान दिया (योगेन्द्र सिकंद, 2011) | बग़दाद में उमय्याँ वंश में मदरसे का प्रचलन हुआ, इस युग में जो पहले से अनौपचारिक शिक्षा चल रही थी उसे औपचारिक शिक्षा का रूप दिया गया, अधिकांश मस्जिद, घर एवं दुकानों को प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र के रूप में तब्दील कर दिया गया

(अहमद, 1985) | अब्बासी युग के दौरान जब मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति अपने चरम सीमा पर थी तब मुस्लिम न केवल यूनानियों के साहित्य और दर्शन में कुशल थे बल्कि विज्ञान में भी पारंगत हो गये | इस अवधि के दौरान अल-मॉमून ने 830 ई० में बैत-उल-हिकमा शिक्षा संस्था के रूप में स्थापित किया (कासमी, 2005) | यह एक उच्च शिक्षा का संस्थान था जिसमें शोध कार्य के लिए प्रसिद्ध विद्वानों को नियुक्त किया गया | इन विद्वानों में ईसाई, यहूदी, भारतीय और मुसलमान थे | अल मामून द्वारा वैज्ञानिकों के काम करने के लिए एक वैधशाला का निर्माण कराया | संस्थान में एक उत्कृष्ट पुस्तकालय भी था, जिसमें दुर्लभ पांडुलिपियाँ और पुस्तकें शामिल थीं | यह संस्थान आक्रमणकारी हजाजी खान द्वारा 1258 ई० में जला दिया गया | ऐसा कहा जाता है कि जब पांडुलिपियाँ फेंकी गयी तो उसकी श्याही से टाइगरस नदी का पानी काला हो गया था | पहली इस्लामिक संस्था जो व्यापक स्तर पर स्थापित हुई | अल-मुइज़ (925-975 A.D) द्वारा अल-अजहर काहिरा विश्विद्यालय के रूप में अस्तित्व में आया (लतीफ़, 1998) | 9 वीं शताब्दी में बग़दाद विश्व में ज्ञान का केन्द्र बन गया | विश्वभर के दर्शनशास्त्री, गणितज्ञ तथा वैज्ञानिक आदि बग़दाद आये | विभिन्न पुस्तकों का अनुवाद प्रत्येक ज़बान जैसे- लैटिन, फ्रेंच, संस्कृत आदि में कराया गया | इब्न-ए-रूशद और इब्न-ए- सिना ने अरस्तु के कार्यों को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया | बीजगणित, त्रिकोणमिति, अभियांत्रिकी तथा खगोल विज्ञान आदि जिनकी बात आज हम करते हैं उसकी शुरुआत कई सौ वर्ष पहले बग़दाद में हो चुकी थीं (इस्लाम: एम्पायर ऑफ़ फेथ, 2013) | स्टेनली लीन्पोल (2012) की पुस्तक A World Without Islam के अनुसार दर्शन, चिकित्सा तथा संगीत के क्षेत्र में अरब सभ्यता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा कई शिक्षा संस्थाएं अस्तित्व में आयीं जैसे बग़दाद

का मदरसा मुस्तम सरियाह एवं जामिया निज़ामिया, उत्तर अफ्रीका का करावें विश्वविद्यालय ,काहिरा का अल-अज़हर तथा स्पेन का कोराडोवा विश्वविद्यालय | अल-गज़ाली जैसा महान शोधार्थी इन्ही संस्थाओं की उपज है | इन संस्थानों में धार्मिक एवं धर्म-निरपेक्ष दोनों ही प्रकार की शिक्षा दी जाती थी (मजूमदार, 2003) | इन सारे मदरसों ने विश्व को महान गणितज्ञ, वैज्ञानिक तथा दर्शनशास्त्री दिए | The Medico (Novel) के अनुसार स्पेन का कोराडोवा विश्वविद्यालय जिसे अब गिरजाघर बना दिया गया है, वहां पर पादरियों ने लगभग 10 लाख किताबों को जला दिया, जिसमें गणित, विज्ञान एवं दर्शन आदि की किताबें शामिल थीं | महान इतिहासकार A.J.Joybee की किताब 'इतिहास का अध्ययन' में 600 साल की 25 संस्कृतियों का अध्ययन कर बताया कि जब पूरा यूरोप अन्धकार में जी रहा था तो उनको रोशनी में लाने का कार्य अरबवासियों ने ही किया था |

भारत में मदरसा शिक्षा

भारत में मुस्लिम हुकूमत 12 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक चली | भारत में मदरसा शिक्षा को दो प्रमुख कालखंडो में देख सकते हैं -

- ❖सल्तनत काल के दौरान मदरसा शिक्षा
- ❖मुगलकालीन मदरसा शिक्षा

भारत में सल्तनत काल की शुरूआत शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी (1203-1206) से हुई | इसने शिक्षा के विकास के लिए **'ताजुल मसिर'** नाम से मदरसे की बुनियाद डाली | साथ में कई मकतब और मदरसे स्थापित किये | सुलतान इल्तुतमिश (1206-1210) ने **'मदरसा मोज़िया'** कायम किया (खान,1973) । इसके बाद कई और सुल्तानों जैसे नसीरुद्दीन मुहम्मद (नसरिया मदरसा) बलबन ,अलाउद्दीन खिलजी (मकबरा-ए- अलाउद्दीन खिलजी)

फिरोज़ शाह तुगलक तथा सिकंदर लोदी आदि ने मदरसे की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया | सुल्तान महमूद शाह (1375-1395) ने शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित किया तथा अनाथों एवं ज़रूरतमंदों के लिए मुफ्त भोजन एवं रहने की व्यवस्था की तथा बीदर में मदरसा और पुस्तकालय बनवाया | जिसमें 30,000 पुस्तकें थीं (अहमद 2008) | जब तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया, तब कुछ वक्त के लिए शिक्षा व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गयी थी परन्तु सिकंदर लोदी (1489-1395) ने इसमें सुधार किया और जौनपुर, अहमदाबाद, बिहार,गुलबर्गा, बीदर, दौलताबाद आदि में मदरसे की स्थापना की |

मुगल शासन के दौरान मदरसा शिक्षा

पूर्ववर्ती मुसलमान शासकों की अपेक्षा मुगलों की शिक्षा में अधिक रुचि थी | भारत में मुगलों के समय में यह परम्परा थी कि ज़मीन का एक छोटा हिस्सा जिसे मदद-ए-महास (आर्थिक सहायता) कहा जाता था उसे उलेमा को ज्ञान के प्रसार के लिए दिया जाता था | पहले मुग़ल बादशाह ज़हीरुद्दीन बाबर (1526-1530) ने पहले से स्थापित मदरसों की मरम्मत करायी | अकबर ने महाभारत, रामायण, अर्थवेद आदि का अनुवाद कराया तथा आगरा फतेहपुर और कई जगहों पर मदरसे स्थापित किये | जहाँगीर ने एक कानून बनाया कि जो व्यक्ति लावारिस मरेगा उसकी संपत्ति विद्यालयों तथा धार्मिक भवनों की मरम्मत के लिए इस्तेमाल की जाएगी (भटनागर एवं कुमार, 2005) | इसके अलावा , शाहजहाँ तथा औरंगजेब आदि ने मदरसे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया | इसी युग में मदरसा व्यवस्था में दर्स-ए-निज़ामी के रूप में महत्वपूर्ण विकास हुआ | पहले मदरसे का पाठ्यक्रम जो मुल्ला निजामुद्दीन (1089-1161) द्वारा बनाया गया, जो विज्ञान, कला और धार्मिक

शिक्षा पर आधारित था (लान, 1973) | और फिर मुगलों के दौर में कई यूरोपीय शक्तियां व्यापार करने के लिए भारत आईं | अंग्रेजों का दखल शासन व्यवस्था के साथ-साथ सभी क्षेत्रों पर पड़ा। वारेन होस्टिंग द्वारा 1781 में कलकत्ता मदरसा की बुनियाद डाली गई तथा साथ ही हुगली में मदरसा मोहसिनियाँ कायम किया गया (अखलाक,1985) | इसी प्रकार दिल्ली, पंजाब, गुजरात, बिहार एवं सिंध इत्यादि में कई मदरसे कायम हुए, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया | सर सय्यद अहमद खां अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "असर-अल-सनादीद" में लिखते हैं कि मुग़ल काल के दौरान मकतब तथा मदरसे देश और देश के बाहर तक फैले हुए थे वह आगे लिखते हैं कि मुग़ल साम्राज्य का पतन औरंगजेब के समय से ही शुरू हो गया था लेकिन मदरसे की स्थापना अंतिम मुग़ल शासक तक होती रही (हक़, 2013) |

ब्रिटिश भारत में मदरसा शिक्षा

मुग़ल साम्राज्य के पतन के बाद ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिस्थापन हुआ | इसका असर देश के प्रत्येक क्षेत्र राजनीति, समाज, संस्कृति एवं शिक्षा पर हुआ | मदरसा शिक्षा भी इससे अछूता नहीं रहा क्योंकि सत्ता का अंतर केवल एक राजनैतिक शक्ति तक ही सीमित नहीं था बल्कि मुस्लिम समुदाय के सामाजिक, आर्थिक संस्कृति एवं भावात्मक स्थिति पर भी पड़ा | उस समय मदरसा शिक्षा प्रणाली लोगों को तैयार कर रही थी परन्तु अब इसमें तेज़ी से परिवर्तन आ रहा था मदरसा उन संस्थानों में से एक था जिसने उस समय के परिवर्तन के कड़वे स्वाद को चखा (हक़, 2011) | फिर 1836 में अंग्रेजी सरकार द्वारा मैकाले शिक्षा पद्धति लागू किये जाने के बाद हिन्दू और मुसलमान दोनों वर्गों को अपनी अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करना पड़ा | मुसलमानों को ये डर था कि उनकी सभ्यता और संस्कृति नष्ट हो

जाएगी लिहाज़ा 1866 ई० में उत्तर प्रदेश के नानौता निवासी हजरत मौलाना मुहम्मद याकूब नानौतवी ने सहारनपुर एवं मुज़फ्फरनगर के बीच देवबंद कस्बे में एक पेड़ के नीचे अपने एकमात्र शिष्य महमूद हसन को पढ़ाना शुरू किया | आज यह मदरसा दारूल-उलूम के नाम से प्रसिद्ध है (दशाहिद रहीम) | इस मदरसे ने आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं जैसे वार्षिक परीक्षाएँ, डिग्री देना तथा दीक्षांत समारोह को अपनाया तथा शिक्षा को अलग अलग विभाग में विभाजित किया, सबसे महत्वपूर्ण विभाग दारुल इफ्ता या न्यायशात्र विभाग था जिसका कार्य मुस्लिम समुदाय द्वारा सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक मुद्दों पर पूछे गए प्रश्नों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना था | इसी सिलसिले में जामिया निज़ामिया (1876) नदवतुल उलेमा (1894) आदि मदरसे स्थापित किये गये (अखलाक, 1985) |

वर्तमान में मदरसे की स्थिति

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मदरसा ने सदियों से इस्लामिक शिक्षा को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई है, साथ इस्लामिक विचारों के विकास एवं मुस्लिम समुदाय की प्रगति में महत्तवपूर्ण भूमिका अदा की है | यह कहना गलत नहीं होगा कि मुस्लिम समुदाय का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो मदरसे से अछूता रह गया हो | मदरसे ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया | अगर हम इसका इतिहास देखे तो पता चलता है कि महान विद्वान दर्शनशास्त्री एवं गणितज्ञ आदि को जन्म दिया, परन्तु अगर हम आज के परिपेक्ष्य में देखें तो इसकी स्थिति काफी पिछड़ी हुई है, इसको रूढ़ीवादी जबकि आधुनिक शिक्षा को प्रगतिशील माना जाता है | आज जब मदरसा विद्यार्थी डिग्रियाँ लेकर प्रतिवर्ष रोजगार की तलास में बाहर निकलते है तो उन्हें किसी मुल्क में उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखाई देती

है | मदरसा शिक्षा मुसलमानों की शैक्षिक स्थिति में सुधार क्यू नहीं कर पा रहा है इसके लिए निम्न मुद्दों को देखना होगा |

- इसका प्रमुख कारण परंपरागत मदरसा पाठ्यक्रम | यह पारंपरिक विषयों पर अधिक ज़ोर देते है और आधुनिक विषयों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते है (सना एवं शाज़िल, 2015) | और जब वो राष्ट्रिय स्तर की परीक्षाओं में भाग लेना चाहते है तो उनको कई बाधाओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और ऐसा माना जाता है कि ये बधाएं आधुनिक विषयों जैसे विज्ञान, गणित एवं कंप्यूटर का ज्ञान न होने के कारण आती हैं |
- अधिकतर मदरसे सरकरी मान्यता प्राप्त नहीं होते हैं जिससे उन्हे अनुदान प्राप्त नहीं होता है और आर्थिक समस्याओं से जूझते रहते हैं |
- मदरसे आधारभूत सुविधाओं से वंचित हैं | शिक्षा, नई शिक्षा तकनीकी से अनभिज्ञ है केवल परम्परागत शिक्षा प्रणाली ही लागू है | "आपरेशन ब्लैक बोर्ड" के अनुसार बताई गयी सुविधाओं से वंचित है अर्ध-वार्षिक तथा वार्षिक परीक्षा के अलावा कोई अतिरिक्त परीक्षा नहीं ली जाती है | विद्यार्थियों का शारीरिक व मानसिक विकास नहीं हो रहा है | पाठ्यपुस्तक समय से नहीं दी जाती | शिक्षकों का वेतन कम होने से कौशल युक्त शिक्षकों की कमी है, अधिकांश विद्यार्थी गरीब घर से आते हैं (अली, 2014) |

- मदरसे में शिक्षक कौशल युक्त नहीं हैं | प्रशिक्षण की कमी है | अधिकांश विद्यार्थी केवल निःशुल्क आवास व शिक्षा के लिए ही प्रवेश लेते हैं (नेहल, सलमा एवं हुसैन, 2016) |
- सीखने सीखने की परंपरागत शिक्षण विधि,
- परीक्षा और मूल्याकन की दोषपूर्ण प्रणाली,
- विभिन्न मकतब और मदरसों के बीच आपसी समंजस्य की कमी,
- नियोजन और प्रशासन की दोषपूर्ण गुणवत्ता,
- नवाचार की कमी

सुझाव

शोधकर्ताओं नें मदरसे की स्थिति को सुधारने के लिए निम्न सुझाव दिये-

- सरकार को राष्ट्रीय मानक के अनुसार गावों ब्लाक तथा मुस्लिम मुहल्लों में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर के विद्यालय खोलने चाहिए | मदरसों में दीनी तालीम के साथ आधुनिक तालीम पर भी गौर करना होगा |
- सरकार को अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में कुछ ऐसे पाठ् जोड़ने चाहिए जो उसकी दिनचर्या में शामिल हो और साथ ही ऐसी तकनीक पर भी ध्यान देना चाहिए जो मदरसे के बच्चों के अंग्रेजी भाषा अधिगम में सहायक सिद्ध हो |
- मदरसा शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य को विशिष्ट प्रकार से परिभाषित होना चाहिए ,

- मदरसे के पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा के साथ आधुनिक पाठ्यक्रम को भी स्थान देना चाहिए,
- एक ऐसी समिति स्थापित करनी चाहिए जो मकतब एवं मदरसा दोनों में ही आधारभूत आवश्यकताओं का अध्ययन करे |
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहित करना चाहिए |
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रावधान होना चाहिए जो कि मदरसा शिक्षा के साथ सहयोग करने के लिए जाते हैं | उन्हें या तो विश्वविद्यालयों से संबद्ध मौजूदा प्रशिक्षण संस्थानों में समायोजित होना चाहिए, या उनके लिए प्रशिक्षण का एक अलग व्यवस्था करनी चाहिए |
- केंद्र एवं राज्य सरकार दोनों को ही मदरसों को अनुदान देना चाहिए |
- मुस्लिम बच्चों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के मानकों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए मदरसा के सभी स्तर पर पुस्तकों और शिक्षण-अधिगम-सामग्री की उपलब्धता आवश्यक है |
- विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के लिए मदरसों में खेल के उपकरण प्रदान करने चाहिए तथा इसके लिए भूमि की प्रमुखता सुनिश्चित करनी चाहिए और साथ में ही आंतरिक मदरसा खेल प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देना चाहिए |
- मदरसे में सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रावधान होना चाहिए ताकि एक विद्यार्थी के संपपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो |

निष्कर्ष

इस अध्ययन में भारतीय मुसलमानों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति, मदरसे में उनका नामांकन तथा उनके गौरवपूर्ण इतिहास पर प्रकाश डाला गया है | साथ ही भारतीय मदरसों की शैक्षिक समस्याओं एवं उनकी स्थिति में सुधार के लिए कुछ सुझाव भी दिया गया है | उत्तर आधुनिक युग में मदरसों की शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मकता एवं सूचना, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान आदि पर ज़ोर देना चाहिए ताकि मदरसा को समाज की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके जिससे वह से उत्तीर्ण हुए विद्यार्थी समाज के लिए उपयोगी नागरिक बन सके |

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

.नारायण, के. आर. (2013). स्कीम फॉर प्रोवाइडिंग क्वालिटी एजुकेशन इन मदरसा इवैल्यूएशन स्टडी रिपोर्ट, सेंटर फॉर दलित एंड माइनरटीज़ स्टडीज़, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली.

http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_documents/SPQEM_O.pdf

प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया. (2014). स्कीम फॉर मदरसा मॉडर्नाइजेशन

http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/141717.pdf

अहमद, ए .एम्. (2008). आर रिलीजियस पीपल मोर प्रोसोशल? अ कवासी-एक्सपेरिमेंटल स्टडी विथ मदरसा पुपिल्स इन रूरल कम्युनिटी इन इंडिया, जर्नल फॉर साइंटिफिक स्टडी ऑफ़ रिलिजन, 48 (2), 3-20.

http://www.jstor.org/stable140405622?seq=1#page_scan_tab_contents

हक़, ए .एच. एम . (201३). कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ़ मदरसा इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव, जर्नल ऑफ़ हुमानिटीस एंड सोशल साइंस, 1(4), 11-13.

https://www.thecho.in/files/contribution-of-madrasa-in-historical- perspective.pdf

अली, एमडी. एम. एंड किशोर, के. (2014). सेक्युलर एटीटयूड: अ स्टडी ऑफ़ मदरसा स्टूडेंट्स, इंडियन जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, 4(11), 167-169.

https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/file.php?val=November_2014_1492773454__50.pdf

अली, एम डी. एम. (2015). एन ओवरविव ऑन मदरसा एजुकेशन इन इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंट रिसर्च, 5(3), 3714-3716.

http://www.journalijdr.com/overview-madarsa-education-india

हक़, ए. एच. एम. (2013). स्टेटस ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज एंड मदरसा एजुकेशन इन इंडिया: ऍन ओवरविव, जर्नल आफ हुमानिटीस एंड सोशल साइंस, 1(4), 14-17.

https://www.thecho.in/files/status-of-islamic-studies---madrasa-education-in-india.pdf

गिब, एच. ए. आर., क्रमर, जे. एच. एल एंड ब्रिल, इ. जे. (1974). शोर्टर एन्सैक्लोपिडिया ऑफ़ इस्लाम, लिडेन, नीदरलैंड, 300-309.

http://www.brill.com/concise-encyclopaedia-islam

अलजुनैद, एस. एम. के. एंड हुसैन, डी. आई. (2005). एस्ट्रेनज फ्रॉम दा आइडियल पास्ट: हिस्टोरिकल एजुकेशनऑफ़ मदरसा इन सिंगापूर, जर्नल ऑफ़ मुस्लिम माइनॉरिटी अफेयर्स, 25(2), 250-260.

http://profile.nus.edu.sg/fass/mlsasmk/Madrasahs.pdf

अल-ज़ीरा, ज़ेड. (2011). होलनेस एंड होलीनेस इन एजुकेशन: अन इस्लामिक प्रस्पेक्टिव, हेर्नडो, वी अ: इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इस्लामिक थॉट

सिकंद, वाई. (2004). रेफोर्मिंग दी इंडियन मदरसा: कंटेम्परोरी मुस्लिम वौइस, एशिया पसिफ़िक सेंटर फॉर सिक्यूरिटी स्टडीज, 117-143.

http://apcss.org/Publications/Edited%20Volumes/ReligiousRadicalism/PagesfromReligiousRadicalismandSecurityinSouthAsiach6.pdf

मियासाहिब, एम. (1991). अल-हदीस: एन इंग्लिश ट्रांसलेशन एंड कमेन्ट्री, नई दिल्ली: इस्लामिक बुक सर्विस.

कासमी, एम. एस. (2005). मदरसा एजुकेशनल फ्रेमवर्क: मर्कज़ुल मारिफ एजुकेशनल एंड रिसर्च सेंटर इन एसोसिएशन विद मानक पब्लिकेशन, मुंबई, पृष्ट संख्या-13.

अलवी, एस. एम. ज़ेड. (1998). मुस्लिम एजुकेशन थॉट इन दा मिडिल एज. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूशर्स: पृष्ट संख्या-2.

अहमद, एम. ए. सी. (1985). ट्रेडिशनल एजुकेशन अमंग मुस्लिम्स. दिल्ली: बी. आर पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन: पृष्ट संख्या-2-3.

मजूमदार, ए. एच. (2003). अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन इन इस्लाम विद नोट ओं इन्डियन पर्सपेक्टिव, ऍन नदवा नार्थ ईस्ट इंडिया ईमारत-ए-शरिया एंड नदवा-तू-तामीर: नागांव: पृष्ट-1.

हुसैन, एस. एम. ए. (2005). मदरसा एजुकेशन इन इंडिया: एलेवेनथ टू ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी. नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूतर्स: पृष्ट संख्या-19.

लॉ,एन. एन. (1973). प्रमोशन ऑफ़ लर्निंग इन इंडिया. नई दिल्ली: इदारह-ए-अदबियात: पृष्ट संख्या-19.

लतीफ़, ओ. ए. (1998). अल-अज़हर मूव्स विद डा टाइम्स, काहिरा, अल-अहरम वीकली, 385.

http://weekly.ahram.org.eg/1998/385/fr2.htm

अहमद, के. आ. (2014). मदरसा एजुकेशन इन असम एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन दा सोसाइटी-अ क्रिटिकल स्टडी, पी.एच. डी. थीसिस. (अप्रकाशित), कला विभाग, गुवाहटी विश्विद्यालय.

भटनागर, एस. और कुमार, एस. (2005). भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास. मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन हाउस: पृष्ट संख्या-33.

चौधरी, ए. क्यू. एस. ए. (2008). डेवलपमेंट ऑफ़ मदरसा एजुकेशन इन असाम सिंस इन्दिपेंडेन्स विद स्पेशल रेफरेंस टू बराक वैली रीजन, पी.एच.डी. थीसिस, (अप्रकाशित), शिक्षा विभाग. अलीगढ विश्विद्यालय.

अख्तर, डब्लू. (2012). अंडरस्टैंडिंग मदरसा एजुकेशन एंड इट्स इम्पैक्ट-अ केस स्टडी ऑफ़ कछ (अटोक) रिजन इन पकिस्तान, पी.एच. डी. थीसिस, ब्रोद्फोर्ड सेंटर फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट, ब्रोद्फोर्ड विश्विद्यालय.